e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 2, February 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.569

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

||Volume 11, Issue 2, February 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1102131|

राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार

डॉ. संगीता शर्मा

एसोसिएट प्रो. हिन्दी विभाग, दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

शोध सार

हिंदी को जन–जन की भाषा बनाने के लिए अनेक महान महापुरुषों, साहित्यकारों, लेखकों एवं कवियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्हीं के प्रयासों से आज हिंदी के किसी एक क्षेत्र में बड़ा विस्तार हुआ है की भाषा न होकर समूचे देश की भाषा है। यदि हम चाहते है, कि संसद में समूचे राष्ट्र की भावनाएँ व्यक्त हों, हमारा लोकतंत्र गूंगा न रहे, हम दूसरे देशों के ज्ञान की जूठन को ही सब कुछ न समझते रहें तभी हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार होगा।

समुचे हिन्दुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए हमको भारतीय भाषाओं में एक ऐसी भाषा की जरुरत है जिसे आज ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग जानते और समझते हों और बाकी लोग भी इसे आसानी से सीख सकें। इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है। जो जान कल्याण की भाषा के रूप में प्रमाणित है। (महात्मा गांधी)

आदिकाल से देश के लोगों को एक सुत्र में बांधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता रही है। प्रत्येक देश की सर्वाधिक समृद्ध भाषा को राष्ट्रभाषा का गौरवपूर्ण पद प्रदान किया जाता है। किसी राष्ट्र के समस्त देशवासियों में सच्चा प्रेम, संगठन और एकता की भावना को भरने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है इस बात से कोई बुद्धिमान इंकार नहीं कर सकता। जहाँ लोग एक दूसरे की बात को समझ नहीं सकते, वहाँ उनमें परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना उत्पन होना असम्भव है। भारत की वर्तमान अवस्था को ध्यान में रखते हुए हमारी राष्ट्रभाषा कौन सी हो, जिसे हम पूर्णतया अपनावें और जिसका प्रसार समस्त राष्ट्रवासियों को एक सूत्र में पिरोने के लिए करें। इस नियम पर भारत की संविधान सभा में गंभीरतापूर्ण विचार किया गया। अंत में 14 सितम्बर, 1949 को यह निश्चय किया गया कि भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। भारत के सविंधान निमार्ण काल में देश के सभी नेताओं ने सर्वसम्मत्ति से हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा स्वीकार किया था। सभी इस पक्ष पर एकमत थे कि अंग्रेजी यहां की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

मुख्य शब्द

साहित्यकारों, तादाद, गम्भीरतापूर्वक सर्वसम्मत्ति, परिवतर्नशील, स्वतंत्रता, आंदोलन, पत्रकारिता, प्रतिष्ठित,

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
||Volume 11, Issue 2, February 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1102131|

प्रतिनिधित्व, पश्चात्, संविधान, राष्ट्रीयता, चहुँदिशि, गौरवपूर्ण।

वास्तव में हिंदी सारे भारत की एकता और अखण्डता का प्रतीक है। हिन्दी साहित्य का क्षेत्र चहुँदिशि विस्तृत है। हिंदी साहित्य का भंडार पर्याप्त समृद्ध है। भाषा निरंतर परिवर्तनशील है और विकासमान है। मनुष्य निरंतर प्रकृति के संसर्ग में अपना विकास करता रहा है। मनुष्य और प्रकृति का अर्न्तविरोध सनातन है। सच तो यह है कि भारतीय भाषाओं में संस्कृत ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो जितनी चिर प्राचीन है, उतनी ही चिर नवीन भी है। संस्कृत की नवीनता के कारण संस्कृत भाषा आज भी समस्त भारतीय भाषाओं के गले का हार है। उसे उतार कर रख देंने पर किसी भी भारतीय भाषा का ठीक ठीक अध्ययन सम्भव नहीं है। सब लोग यह मानकर चलते हैं कि मूल भाषा संस्कृत है और आर्य परिवार की सभी भाषाओं की जननी है और हिंदी भी संस्कृत की पुत्री है। पारिवारिक संबन्ध यही है। इस मान्यता को स्वीकार करके ही हिंदी भाषा का इतिहास लिखा गया हे। हिंदी भाषा के संबन्ध में क्रान्तिकारी विचार सर्वप्रथम भाषा और समाज में व्यक्त किया गया है। हिंदी का असली राजभाषाई रूप स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही पनपा है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता ने अहम् भमिका अदा की है। यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनितिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है, इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है। सविधान सभा में लम्बी चर्चा के बाद 14 सितंबर सन 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। हिंदी भारतीयों की भावात्मक अभिव्यक्ति का एक मात्र है। यह भारत की आत्मा है। गांधी जी ने यो कहा था की यदि मेरे हाथों देश की बागडोर होती तो आज ही विदेशी भाषा में दी जाने वाली शिक्षा को बंद कर देता, और सभी को स्वदेशी भाषाएं अपनाने को मजबूर कर देता। किन्तु यह अंग्रेजी की कुर्सी उलटाए बिना सम्भव नहीं है। अतः "अंग्रेजी हटाओ स्वदेशी भाषा अपनाओ" यह भावना जन–जन के हृदय में उत्पन्न करनी होगी। डॉ. जाकिर हुसैन के शब्दों में राष्ट्रीय एकता का सर्वप्रथम माध्यम हिंदी है।

स्वतंत्रता संघर्ष के समय हिंदी की भूमिका

संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किये जाने के पीछे महत्वपूर्ण राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक कारण रहे हैं। ऐसा नहीं था की केवल स्वतत्रतां आंदोलन के सौ वर्षो के काल में ही हिन्दी राष्टभाषा के रूप में उभरी थी, बल्कि इससे पूर्व भी इसे किसी न किसी रूप में न्यायालय तथा सरकारी कार्यालयों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास होते रहें थे। इन प्रयासों के फलस्वरूप हिन्दी स्वयं को उस रूप

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
||Volume 11, Issue 2, February 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1102131|

में प्रतिष्ठित एवं विकसित कर चुकी थी कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान की दृष्टि से उपयोगी होगा। भारत में अंगेजी भाषा सर्वपथम सन 1600 ईसवी में ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से प्रवेश किया था।

सर्वप्रथम सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने अंग्रेजों की भाषा संबंधी निति को गहराई से प्रभावित किया। इस आंदोलन के कुछ समय बाद ही हिंदी और नागरी लिपि के लिए शुरुवात हुई। प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात् यह मांग जोर पकड़ने लगी थी की न्यायालय की भाषा सरल, सुबोध और नागरी लिपि में लिखित हिंदी होनी चाहिए। इस मांग ने एक व्यापक आंदोलन का रूप ले लिया। हिंदी के लिए सार्वजनिक रूप से प्रस्ताव पारित किए गए, और सरकार के पास ज्ञापन भेजे गए। इसके फलस्वरूप सरकार ने 1873 में यह आदेश जारी किया कि बिहार की अदालतों और दफ्तरों में सभी विज्ञाप्तियों और घोषणाएँ हिंदी भाषा में जारी की जाएं। इस प्रकार सही अर्थो में हिंदी के प्रचार का काम सन 1881 से ही शुरू हुआ माना जा सकता है। 19 वीं शताब्दी के आठवें दशक के आरम्भ में ही हिंदी आन्दोलन की जड़े मजबूत हो गई। भारतेन्दु हरिशचंद्र जैसे व्यक्ति का नेतृत्व मिला, जिसने हिंदी की जड़ों को और अधिक मजबूत कर दिया। हिंदी का प्रयोग होने से जमींदार, साहूकार, व्यापारी और सभी को सुविधा होगी, क्योंकि सभी जगह हिंदी का ही प्रयोग है। सन 1873–74 के वार्षिक प्रांतीय भाषा रिपोर्ट में यह बताया गया था की प्रान्त के 71 प्रतिशत विधार्थी हिंदी माध्यमं से पढ़ने के इच्छुक हैं। इससे भी हिंदी आंदोलन को बल मिला था। ऐसा माना जाने लगा था की राष्ट्रीय चेतना का सीधा संबंध भाषा से है। यह भाषा सम्पूर्ण भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती थी। हिंदी के लिए सर्व्प्रथम विचार करने वालों में बंगला भाषी केशवचन्द्र सेन थे। इन्होने सन 1873 में अपने पत्र सुलभ समाचार में लिखा :– यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उपाए क्या है ? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाए है ! इस समय भारत में जितनी भी भाषाएँ प्रचलित हैं, उनमे हिंदी भाषा प्राय सर्वत्र प्रचलित है! इस हिंदी भाषा को यदि भारतवर्ष में एकमात्र भाषा बनाया जाए, तो अनायास ही यह हो सकती है! इस प्रकार 19वीं शताब्दी के अंत होने तक इस प्रश्न पर सभी भारतीय नेता एकमत थे कि यदि भारत की कोई एक सार्वदेशिक भाषा हो सकती है, तो उसकी क्षमता मात्र हिंदी भाषा में है ! सवतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित एवं स्थापित करने में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ! भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कारण भाषा के लिए

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
||Volume 11, Issue 2, February 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1102131|

अनुकूल राजनीतिक वातावरण बनता चला गया ! इस वातावरण में कांग्रेस के नेता, राजनीतिक संस्थाएँ तथा यह तक कि समाज सुधारक संस्थाएँ भी हिंदी के प्रचार – प्रसार के लिए आगे आई! इन्होंने न केवल हिंदी को अपनाया, बल्कि उसे व्यापक भी बनाया! सन् 1931 में गाँधी जी ने सपष्ट रूप से लिखा यदि स्वराज्य अंग्रेजी पढ़ें – लिखे भारतवासियों का है, और केवल उनके लिए है तो सम्पर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी! लेकिन यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ो निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों और सताए हुए अधूतों के लिए है, तो सम्पर्क भाषा केवल हिंदी ही हो सकती है ! वे आरम्भ से ही केवल अंग्रेजों के ही नही, बल्कि अंग्रेजो के भी विरोध रहें! 6 फरवरी 1914 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने विद्यार्थियों के सामने सपष्ट रूप से कह दिया था–अंग्रेजी भाषा हमारे राष्ट्र के पाँव में बेड़ी बनकर पड़ी हुई है! गाँधी जी ने हिंदी को केवल भाषा ही नहीं, बल्कि उसे भारतीय संस्कृति से भी जोड़ा गाँधी जी यह जानते थे की भाषा का प्रचार –प्रसार स्वतः नहीं होता। उसके लिए प्रयास करने होंगे। गाँधी जी का भाषा संबंधी दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक और व्यावहारिक था। इसमें कोई दो मत नहीं था की यदि गाँधी जी ने राष्ट्रभाषा के लिए हिंदी और हिंदुस्तानी को अपना ध्येय नहीं बनाया होता, तो हिंदी के प्रचार –प्रसार और विकास का काम कठिन हो गया होता। गाँधी जी का स्पर्श पाकर ही हिन्दी भाषा इतनी तेजी से आगे बढ़ सकी। किन्तु हिंदी भाषा के लिए व्यक्तिगत प्रयास स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व ही प्रारम्भ हो गए थी इसमें राजा राम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन तथा स्वामीदयानन्द सरस्वती अदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी के लिए निम्न राजनेताओ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है –लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, पं मदनमोहन मालवीय, राजश्री पुरषोत्तमदास टंडन, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, काका साहिब कालेलकर, सेठ गोविन्ददास विनोबा भावे आदि के दौरान हिंदी में जन संपर्क स्थापित करके उन्होंने यह सिद्ध किया की हिंदी देश की राष्ट्रभाषा है स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारतीय जनता के सामने अतीत के गौरव को प्रस्तुत करके उनमे राष्ट्रप्रेम की भावना भरने में अनेक सामाजिक एवम धार्मिक संस्थाओ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसी कुछ महत्वपूर्ण संस्थाए निम्न है –ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, थियोसोफिकल सोसाइटी, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आदि ने भी हिंदी के प्रचार–प्रसार का काम किया। हिंदी के अध्यापन से भी कुछ महत्वपूर्ण संस्थाए निम्न रूप से जुडी रही –जैसे काशी नगरी प्रचारणी सभा, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा, प्रचार

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
||Volume 11, Issue 2, February 2022||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1102131|

समिति, वर्धा, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, बम्बई हिंदी विद्यापीठ, स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इसके अतिरिक्त भी अनेक ऐसी संस्थाएं रही, जो भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार और प्रचार के लिए महतवपूर्ण काम करती रही और आज भी कर रहीं है।

निष्कर्ष

यह कहना गलत नहीं होगा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी को देश की एकमात्र सम्पर्क भाषा के रूप में मान्यता दी गई। चुकी यह भाषा विशाल क्षेत्र के लोगों के द्वारा बोली जाती थी, तथा इसके पीछे देश की सांस्कृति चेतना निहित थी, इस लिए सम्पूर्ण भारत के लोगो ने बिना किसी दबाव के एकमत से इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। केवल इतना ही नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा के रूप में इसके प्रचार–प्रसार में भी अपना पूरी तरह योगदान किया। यह योगदान किसी क्षेत्र विशेष से नहीं बल्कि देश की चारो दिशाओं से हुआ। आज कहने को हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। किन्तु उसे वह स्थान नहीं मिल पार रहा जिसकी वह अधिकारिणी है।

यह दुर्भाग्य की बात है की आजादी के बाद यह सर्वस्वीकृत राष्ट्रभाषा हिंदी राजनीती की शिकार हो गई है। इसके बावजूद जन–शक्ति के बल पर यह अपनी गति एवं विकास को निरन्तर बनाए हुई है। इतनी कठिनताओं के साथ भी राजभाषा हिंदी अपने मूल स्वरूप की रक्षा करते हुए सम्पूर्ण देश के जन–जन की भाषा बनी रही।

भारतीय जनता की असली राष्ट्रभाषा हिंदी ही है। हिंदी भाषा पुरे देश को एक सूत्र में पिरोने में और अधिक सक्षम हो सकी। यह हिंदी भाषा की स्वतंत्रता का संघर्ष था। हम भाषा के प्रति कितने जागरूक है। आज हिंदी के वारिस कहा है ?

संदर्भ

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद। प्रथम संस्करण 1986, छब्बीसँवा संस्करण 2019, पृष्ठ –21
2. डॉ मीणा गौतम, डॉ महेश नारायण – स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी, राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ, नई दिल्ली 2008 पृष्ठ –11
3. डॉ रामविलास शर्मा – ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पटना इलाहबाद, पहला संस्करण 2001 पृष्ठ – 44
4. डॉ किशोर वासवानी – राजनेता हिंदी विवेचन और प्रयुक्ति वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2003, 2012, आवृति 2019, पृष्ठ –175
5. डॉ तुलसीराम – नैतिक शिक्षा प्रकाशक डी ए वी प्रकाशन विभाग

चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली , जनवरी 2020, पृष्ठ –26

6. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य उद्धव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली पहला संस्करण 1952 बिसंवा संस्करण 1920, पृष्ठ –194
7. डॉ विजय अग्रवाल – हिंदी भाषा अतीत से आज तक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996 द्वितीय संस्करण 2002, पृष्ठ –94
8. (नामवर सिंह)– आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, गाँधी मार्ग, इलहाबाद प्रथम संकरणरू1962, प्रस्तुत संस्करणः 2016 पृष्ठ– 21
9. (डॉ. विजय अग्रवाल)– हिंदी भाषा अतीत से आज तक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 1996, पृष्ठ–98,99
10. (आचार्य रामचंद्र शुकल)– हिंदी साहित्य का इतिहास प्रकाशक प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली, संकरणः 2021 पृष्ठ– 380
11. (डॉ. बच्चन सिंह)– आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज, नई दिल्ली संकरणरू 2019, पृष्ठ– 30
12. (डॉ. तुलसी राम)– नैतिक शिक्षा, प्रकाशन विभाग चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली, जनवरी 2020, पृष्ठ–27
13. (डॉ. विजय अग्रवाल)– हिंदी भाषा अतीत से आज तक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 1996, द्वितीय संस्करण– 2002, पृष्ठ–111

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.569

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com